International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

शिक्षक शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी. एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी. एल. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन१

रोहिणी शर्मा[1], डॉ. नव प्रभाकर गोस्वामी[2]

[1]शोधकर्त्री शिक्षा विभाग युनिवर्सिटी ऑफ टैकनोलॉजी जयपुर
[2]शोध निर्देशक युनिवर्सिटी ऑफ टैकनोलॉजी जयपुर

शोध सार

यह शोध अध्ययन बी.एड. एवं डी.एल.एड. पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के तुलनात्मक विश्लेषण पर केंद्रित है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है वहाँ प्रशिक्षकों का संतुलित व्यक्तित्व और मजबूत व्यावसायिक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हो गया है। अध्ययन के अंतर्गत 400 प्रशिक्षणार्थियों (200 बी.एड. एवं 200 डी.एल.एड.) का चयन जयपुर जिले से किया गया। शोध में सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत मीरा दीक्षित की "कार्य संतोष मापनी" तथा कोस्टा और मैकक्रे द्वारा विकसित "फाइव फैक्टर इन्वेंटरी" का उपयोग किया गया। प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक परिपक्व एवं प्रभावी पाया गया। इसी प्रकारए व्यावसायिक प्रतिबद्धता के संदर्भ में भी बी.एड. प्रशिक्षु अधिक उत्तरदायी एवं समर्पित दृष्टिगोचर हुएए विशेषतः पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में यह अंतर अधिक स्पष्ट था। जबकि महिलाओं के मामले में डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों ने व्यावसायिक प्रतिबद्धता में अपेक्षाकृत अधिक संलग्नता दर्शायी। यह शोध न केवल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता हैए बल्कि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में आवश्यक सुधार की दिशा भी इंगित करता है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व व व्यावसायिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने में पाठ्यक्रम की संरचनाए प्रशिक्षण वातावरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

प्रस्तावना

क्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार होती है और शिक्षक उस शिक्षा व्यवस्था की रीढ़। एक योग्यए प्रेरित एवं नैतिक शिक्षक ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में शैक्षिक गुणवत्ता की बात हो या नैतिक मूल्यों के संवर्धन कीए इन सबका मूल स्रोत शिक्षक ही होता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षकों का न केवल शैक्षणिक दृष्टि सेए बल्कि उनके व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के स्तर पर भी समग्र विकास हो।

भारत में शिक्षक बनने के लिए विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित होते हैंए जिनमें प्रमुख रूप से दो कोर्स दृ **बी. एड० (शिक्षा स्नातक)** और **डी. एल. एड० (प्राथमिक शिक्षक शिक्षा)** दृ विशेष उल्लेखनीय हैं। बी. एड० कार्यक्रम माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए डिज़ाइन किया गया हैए जबकि डी. एल. एड० प्राथमिक स्तर के शिक्षकों हेतु। दोनों पाठ्यक्रमों के उद्देश्य अलग-अलग स्तर के शिक्षकों को शिक्षण में दक्ष बनाना हैए परंतु प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमिए सामाजिक अनुभवए प्रशिक्षण पद्धतिए पाठ्यक्रम की गहराई एवं संरचना में स्पष्ट भिन्नताएं हैं। ये कारक प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व विकास एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं।

व्यक्तित्व केवल व्यक्ति की बाह्य विशेषताओं का नहींए बल्कि उसकी सोचए दृष्टिकोणए सामाजिक व्यवहारए नेतृत्व क्षमताए आत्म-विश्वासए सहानुभूति एवं उत्तरदायित्व बोध का समुच्चय है। एक प्रशिक्षु शिक्षक का व्यक्तित्व जितना परिपक्वए संतुलित और प्रेरक होगाए वह उतनी ही बेहतर गुणवत्ता का शिक्षक बन सकेगा। वहीं

व्यावसायिक प्रतिबद्धता उस शिक्षक की अपने पेशेए संस्थाए विद्यार्थियों और समाज के प्रति जिम्मेदारीए समर्पण तथा नैतिकता को दर्शाती है। एक प्रतिबद्ध शिक्षक शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पिछले कुछ दशकों में शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में आई गिरावट और शिक्षण को श्पेशाश् मानने की प्रवृत्ति को लेकर कई बार चिंता जताई गई है। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि यह अध्ययन किया जाए कि वर्तमान समय में बी. एड० और डी. एल. एड० प्रशिक्षण ले रहे भावी शिक्षकों का व्यक्तित्व और व्यावसायिक दृष्टिकोण कैसा है और इनमें क्या भिन्नताएं या समानताएं पाई जाती हैं। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि क्या प्रशिक्षण के स्तरए शैक्षिक पृष्ठभूमि या सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के कारण इन दोनों वर्गों में व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। यदि हाँए तो ये अंतर किस हद तक हैं और क्या इन्हें शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में बदलाव लाकर संबोधित किया जा सकता हैघ्

यह शोध न केवल शिक्षक शिक्षा को समझने के नए आयाम प्रदान करेगाए बल्कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानोंए नीति निर्माताओं एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों को भी अपने कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में दिशा-निर्देश प्रदान करेगा। इससे भविष्य के शिक्षकों को न केवल कुशल शिक्षकए बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करने में भी सहायता मिलेगी।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **व्यक्तित्व** (च्मतेवदंसपजलद्धरू एक व्यक्ति के आंतरिक गुणोंए व्यवहारए दृष्टिकोण और सोचने की शैली का समुच्चयए जो उसे दूसरों से अलग करता है।
- **व्यावसायिक प्रतिबद्धता** (च्तवमिेपवदंस ब्वउउपजउमदजद्धरू शिक्षक द्वारा अपने कार्यए संस्था एवं शिक्षा के प्रति प्रदर्शित समर्पणए जिम्मेदारी एवं नैतिकता।
- **बी. एड०** (ठण्म्कण्द्धरू माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए दो वर्षीय पेशेवर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- **डी. एल. एड.** (क्ण्म्सण्म्कण्द्धरू प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए दो वर्षीय बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- **प्रशिक्षणार्थी** (ज्तंपदममद्धरू वह व्यक्ति जो शिक्षक बनने हेतु औपचारिक प्रशिक्षण ले रहा हो।

साहित्यिक समीक्षा

शोध की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करने हेतु यह आवश्यक है कि संबंधित विषय में पूर्व में किए गए शोध कार्यों का सम्यक् अध्ययन किया जाए। व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता जैसे मनोवैज्ञानिक व नैतिक आयामों पर अनेक शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं ने महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

ैींतउं 2015य ैपदही – टमतउं ;2018द्ध शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन बल्कि उनके शिक्षण कौशल और विद्यार्थियों के साथ व्यवहार पर भी प्रभाव डालता है। बी. एड० प्रशिक्षुओं में नेतृत्व क्षमता एवं आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक देखा गया हैए जबकि डी. एल. एड० प्रशिक्षणार्थी अधिक भावनात्मक रूप से जुड़ाव रखते हैं।

।हंतूंस ;2017द्ध के अनुसारए शिक्षक की व्यावसायिक प्रतिबद्धता उसकी नौकरी की संतुष्टिए कार्य के प्रति दृष्टिकोण तथा संस्था के प्रति निष्ठा पर निर्भर करती है। एक अन्य अध्ययन (ज्ञनउंत – त्ंदपए 2019द्ध में पाया गया कि प्रशिक्षु शिक्षक जिनका प्रशिक्षण वातावरण सकारात्मक होता हैए वे अधिक प्रतिबद्ध और प्रेरित होते हैं।

टमतउं ;2020द्ध ने बी. एड. और डी. एल. एड. प्रशिक्षणार्थियों के मनोवैज्ञानिक लक्षणों की तुलना करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि पाठ्यक्रम की प्रकृतिए प्रशिक्षण की अवधि तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि प्रशिक्षणार्थियों की दृष्टिकोण एवं प्रतिबद्धता को प्रभावित करती है।

इन शोधों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के क्षेत्र में और गहन व तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता हैए विशेषतः बी. एड. और डी. एल. एड. जैसे भिन्न प्रशिक्षण पृष्ठभूमियों वाले शिक्षकों के संदर्भ में।

शोध का महत्व

यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में न केवल शैक्षिक स्तर पर बल्कि नीति निर्धारण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इससे यह ज्ञात होगा कि विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण पर

कैसा प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के निष्कर्षों से यह समझने में सहायता मिलेगी कि कौन-से पाठ्यक्रम अधिक प्रभावशाली हैं तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह शोध नीति निर्माताओंए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों एवं भावी शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी साबित होगा।

शोध के उद्देश्य

1ण बी. एड. एवं डी. एल. एड. प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों की पहचान एवं तुलना करना।

2ण दोनों पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विश्लेषण करना।

3ण यह अध्ययन करना कि प्रशिक्षण की पद्धतिए शैक्षिक पृष्ठभूमि एवं पाठ्यक्रम संरचना का व्यक्तित्व एवं प्रतिबद्धता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना

1ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

3ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

4ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड़.) के प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

5ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल.एड़.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6ण शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड़.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने अपनी अध्ययन समस्या के उद्देश्यों की प्राप्त करने हेतु वर्णात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया हैए क्योंकि यह मनोविज्ञान की एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि से पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है।

जनसंख्या : जनसंख्या के लिए जयपुर जिले के शिक्षक -शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों को संचालित करने वाले महाविद्यालयों के कुल 400 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श: प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने जयपुर जिले के शिक्षक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों को संचालित करने वाले महाविद्यालयो के कुल 400 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया है जिनमें बी.एड. पाठ्यक्रम के कुल (200द्ध तथा डी.एल. एड. पाठ्यक्रम के कुल (200द्ध प्रशिक्षणार्थियो का चयन किया है।

न्यादर्श तालिका-

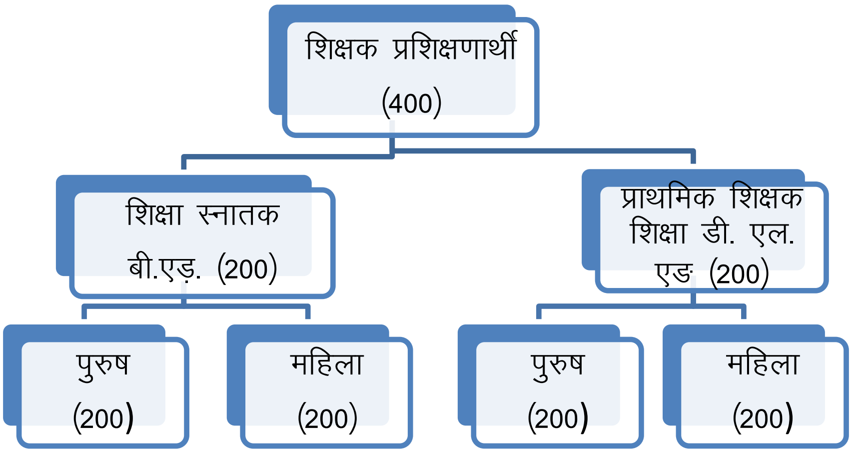

- **अध्ययन के चर**- प्रस्तुत शोध में निम्न चरों को शामिल किया गया है-
- स्वतंत्र चर - शिक्षा शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रम
- आश्रित चर - प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता

शोध में प्रयुक्त उपकरण - प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निर्धारण मापनीयों को काम में लिया है।

1ण मीरा दिक्षित (लखनऊ) द्वारा निर्मित कार्य संतोष मापनी (श्रवइ ैजपेबिजपवद `बंसमेद्ध

2ण पॉल टी. कोस्टा रॉबर्ट आर मैकक्रे द्वारा निर्मित छम्व् थ्थ्प् व्यक्तिव सूची (छम्व् पिअम बिजवत प्दअमदजवतलद्ध

परिकल्पनाओं की सार्थकता की जाँच एवं परिणाम -

परिकल्पना-1 शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी. एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक - शिक्षा (डी. एल. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.1

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड.		200	157.00	18.156	1.284	398		

	व्यक्तित्व						1.249	स्वीकृत
डी.एल.एड.		200	154.60	20.301	1.436	393.13		

परिणाम : सार्थकता के स्तर की जाँच के आधार पर हम यह कह सकते है कि शून्य परिकल्पना शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा - स्नातक (बी.एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के व्यतित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैए को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान से थोड़ा ज्यादा है। अतः कहा जा सकता है कि बी. एड के प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व डी. एल. एड के प्रशिक्षणार्थियो की अपेक्षा अधिक प्रभावी है।

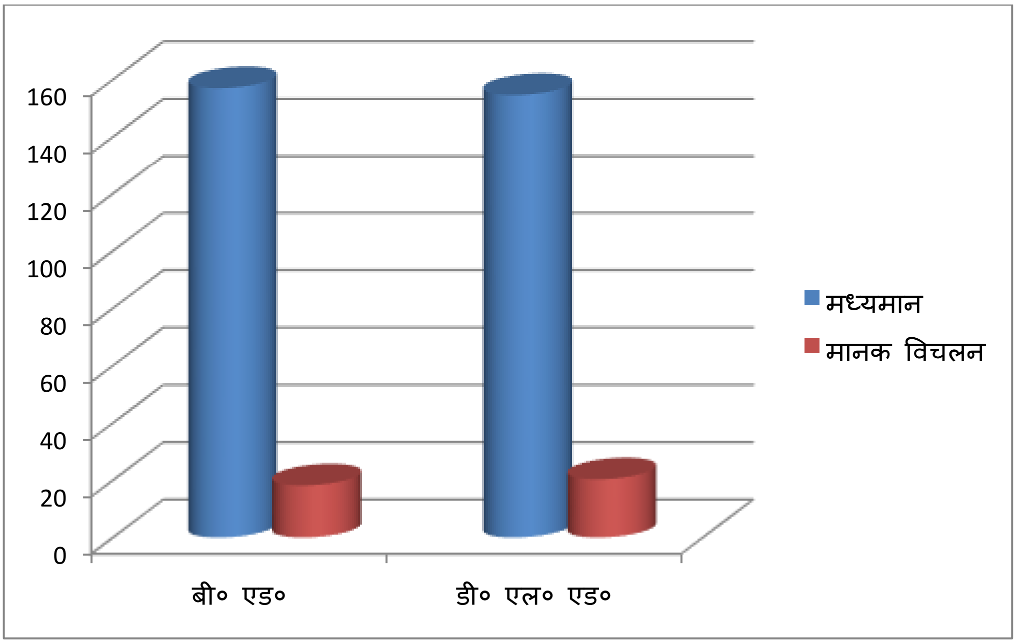

परिकल्पना- 2 शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियो के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.2

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड. (पुरुष)	व्यक्तित्व	100	157.60	19.365	1.937	3.81		स्वीकृत

डी.एल.एड. (पुरुष)		100	153.79	19.427	1.943	3.81	1.39	

परिणाम : सार्थकता के स्तर की जांच के आधार पर हम यह कह सकते है कि शून्य परिकल्पना शिक्षक-शिक्षा के स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैए को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष: शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान से ज्यादा है। अतः कहा जा सकता है कि बी. एड. के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व डी. एल. एड के पुरुष प्रशिक्षणार्थियो के व्यक्तित्व से अधिक प्रभावशाली है।

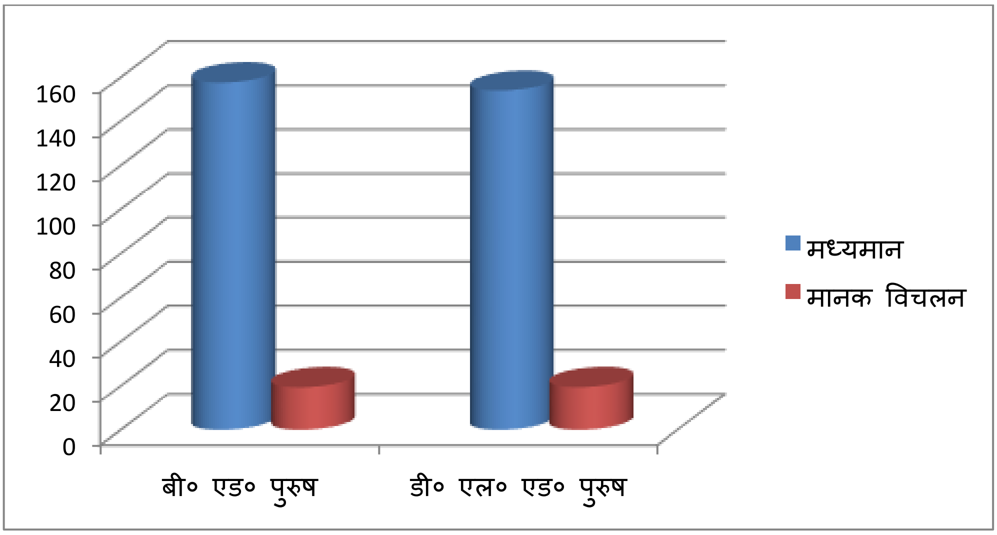

परिकल्पना-3: शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियो के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.3

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड (महिला)	व्यक्तित्व	100	156.41	16.937	1.694	1.00	0.563	स्वीकृत
डी.एल. एड. (महिला)		100	155.41	21.207	2.121	1.620		

परिणामः सार्थकता के स्तर की जांच के आधार पर हम यह कह सकते है कि शून्य परिकल्पना शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अत्तर नहीं पाया जाता हैए को स्वीकृत किया जाता है।

निकर्षः शिक्षक शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल. एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान से ज्यादा है। अतः कहा जा सकता है कि बी. एड कि महिला प्रशिक्षणार्थियो का व्यक्तित्व डी. एल. एड. कि महिला प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व से अधिक प्रभावशाली है।

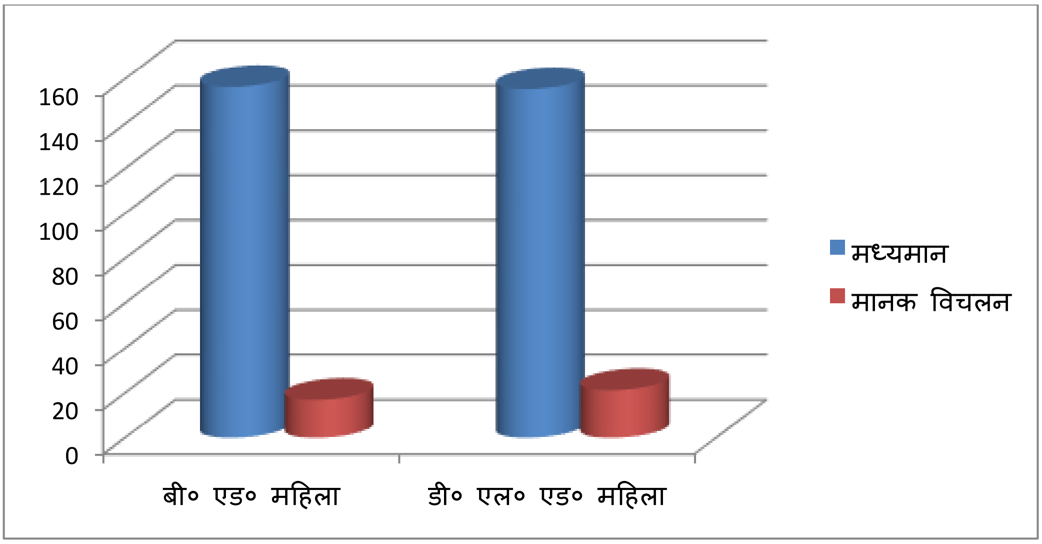

परिकल्पना 4 : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.10

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड.	व्यावसायिक प्रतिबद्धता	200	165.51	41.526	2.936	8.105	0.274	स्वीकृत
डी.एल.एड		200	157.40	52.139	3.687			

परिणामः सार्थकता के स्तर की जांच के आधार पर हम यह कह सकते है कि शून्य परिकल्पना शिक्षक शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के प्रशिक्षणार्थियो की व्यावसायिक प्रतिबद्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैए को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। अत : यह कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों में प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी.एल.एड.) के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक व्यावसायिक प्रतिबद्धता पायी जाती है।

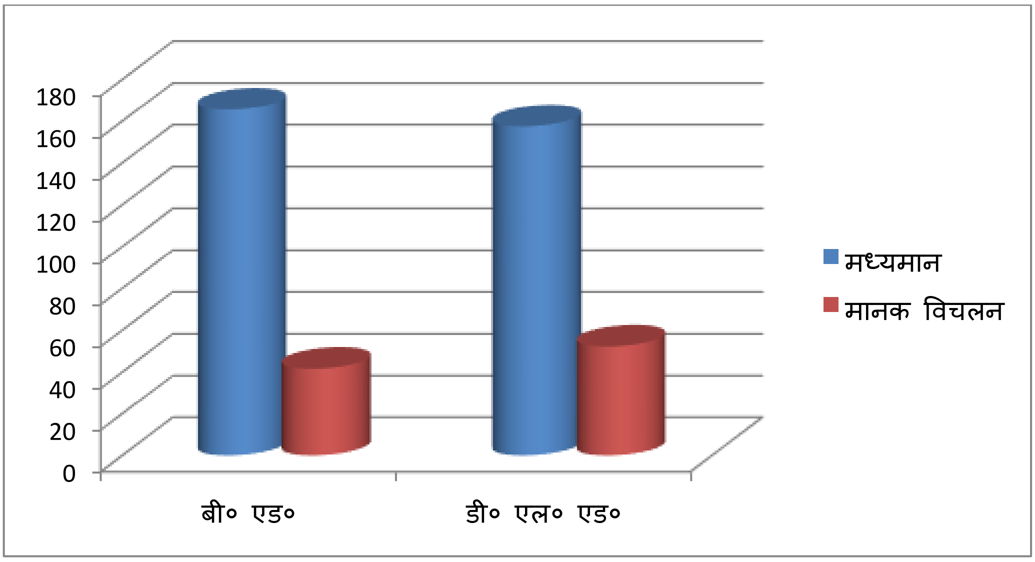

परिकल्पना 5 : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.11

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड. ;पुरुष)	व्यावसायिक प्रतिबद्धता	100	167.37	41.861	4.186	22.18	3.19	अस्वीकृत
डी.एल.एड. ;पुरुष)		100	145.19	55.576	5.558			

परिणाम : सार्थकता के स्तर की जांच के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि शून्य परिकल्पना शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैए को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी. एल.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान की अपेक्षा ज्यादा है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी.एल. एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक व्यावसायिक प्रतिबद्धता पायी जाती है द्य

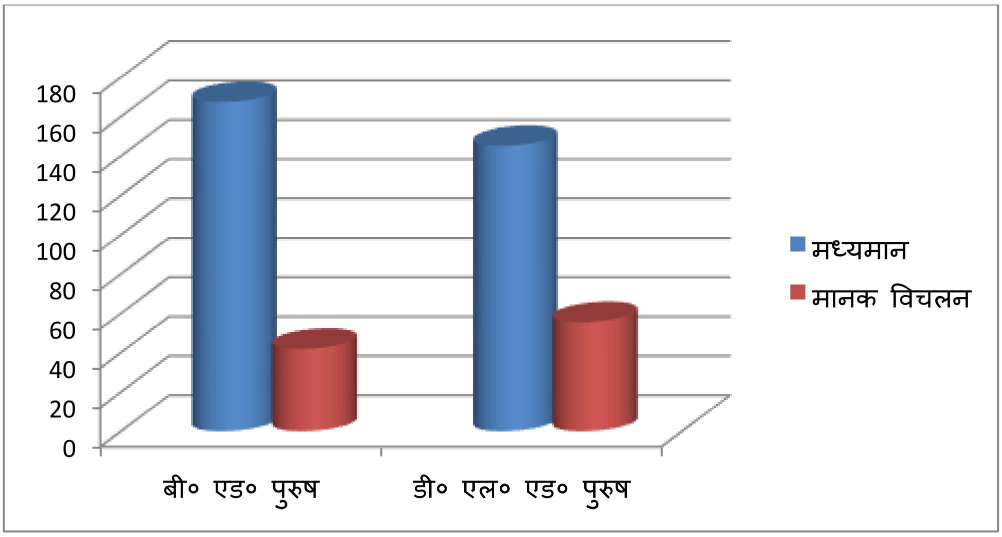

परिकल्पना 6 : शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 4.12

शिक्षक –शिक्षा के पाठ्यक्रम	आयाम / घटक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अन्तर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
बी.एड. ;महिला)	व्यावसायिक प्रतिबद्धता	100	163.65	41.314	4.131	5.97	0.63	स्वीकृत
डी.एल.एड. ;महिला)		100	169.62	45.545	4.554			

परिणाम : सार्थकता के स्तर की जाँच के आधारपर हम यह कह सकते है कि शून्य परिकल्पना शिक्षक-शिक्षा के शिक्षा स्नातक (बी.एड.). की महिला एवं प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी. एल. एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैए को स्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष : शिक्षक-शिक्षा के प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी. एल. एड.) कि महिला प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान शिक्षा स्नातक (बी.एड.) कि महिला प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमान की अपेक्षा ज्यादा है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी.एल. एड.) कि महिला शिक्षणार्थियों में शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक व्यावसायिक प्रतिबद्धता पायी जाती है।

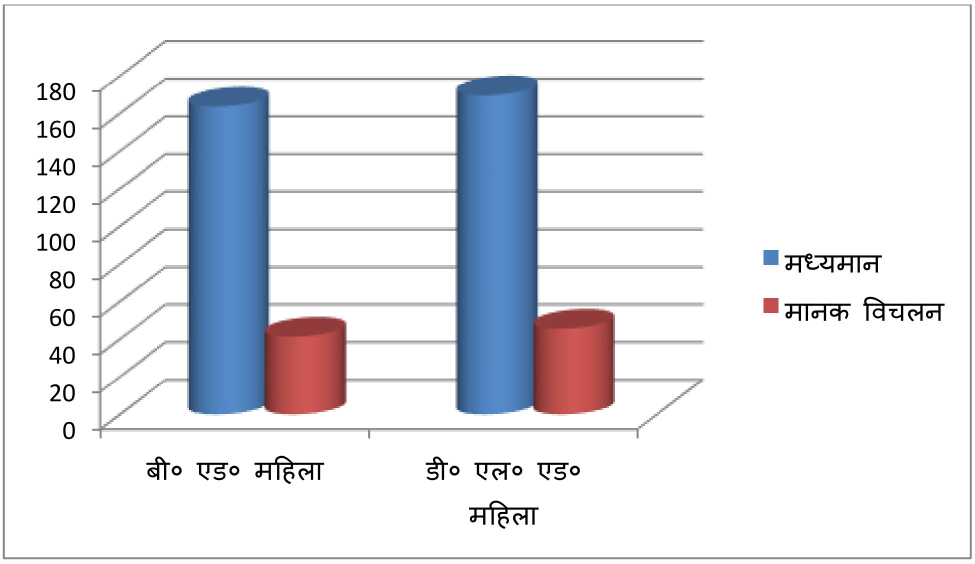

शैक्षिक फलितार्थः-

1ए प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल. एड) के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा शिक्षा स्नातक (बी. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली पाया गया। अतः यह निश्चित -रूप से कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तित्व का स्तर उच्च होता है।

2ए प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा शिक्षा- स्नातक (बी. एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तिव अधिक प्रभावशाली पाया गया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तित्व का स्तर उच्च होता है।

3ए प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल. एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली पाया गया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तित्व का स्तर उच्च होता है।

4ए प्राथमिक शिक्षक -शिक्षा (डी.एल. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा शिक्षा स्नातक (बी. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों ने व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी. एड.) के प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर उच्च होता है।

5ए प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा (डी.एल.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों ने व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा स्नातक (बी.एड.) के पुरुप प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर उच्च होता है।

6ए शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी.एल.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियो ने व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर अधिक बल दिया। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी.एल.एड.) की महिला प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर उच्च होता है।

निष्कर्ष आधारित सुझाव

- डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए चूंकि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली पाया गया हैए अतः यह आवश्यक है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्तित्व विकास से संबंधित गतिविधियाँ (जैसे दृ नेतृत्व विकासए संप्रेषण कौशलए आत्मविश्वास निर्माण आदि) को और अधिक प्रभावी बनाया जाए।
- डी.एल.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के लिए व्यक्तित्व संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किए जाएं
- शोध के अनुसार बी.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली है। अतः डी.एल.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के लिए कार्यशालाएँए समूह चर्चाएँए तथा प्रेरक सत्र आयोजित कर उनके व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- डी.एल.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविकास हेतु सशक्तिकरण कार्यक्रम चलाए जाएं बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व डी.एल.एड. की तुलना में अधिक प्रभावशाली पाया गया है। अतः डी.एल.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों को आत्मविश्वास व नेतृत्व क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता जागरूकता बढ़ाई जाए चूंकि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता अधिक पाई गईए अतः डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में नैतिकताए शिक्षक की भूमिका व उत्तरदायित्व से संबंधित मॉड्यूल को प्रभावी ढंग से शामिल किया जाना चाहिए।
- डी.एल.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता हेतु प्रोत्साहन बी.एड. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में डी.एल.एड. पुरुषों की प्रतिबद्धता कम पाई गई हैए अतः उन्हें पेशे की गरिमाए शिक्षकीय उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक सजग एवं जागरूक बनाने के लिए प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
- बी.एड. महिला प्रशिक्षणार्थियों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता बढ़ाने के प्रयास किए जाएं यद्यपि बी.एड. की महिला प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली हैए परंतु व्यावसायिक प्रतिबद्धता के संदर्भ में वे डी.एल.एड. की महिला प्रशिक्षणार्थियों से पीछे हैं। अतः उन्हें व्यावसायिक दृष्टिकोण से अधिक सक्रियए समर्पित और उत्तरदायी बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण एवं प्रेरणा सत्रों की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. : शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्याकंन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण, 2005
2. भूषण शैलेन्द्र, वार्ष्णेय : शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवम् संस्करण

डॉ. अनिल कुमार
3. गोस्वामी डॉ. बुद्धिप्रकाश, त्रिवेदी,डॉ. सुधा, गर्ग, ओ.पी. : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध, स्वाति पब्लिकेशन्स, जयपुर
4. गुप्ता डॉ. वाई.के. : शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर संस्करण 2005
5. जीत भाई योगेन्द्र : शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृतियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण, 2000
6. कुलश्रेष्ठ, डॉ. एस.पी. : शैक्षिक प्रौद्योगिकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण
7. कपिल, डॉ. एच.के. : सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण